

अनियंत्रित नरिमाण से उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्र के पारस्थितिकी तंत्र को खतरा

चर्चा में क्यों?

देहरादून में रयिल एस्टेट का तेज़ी से वसितार [पारस्थितिकी क्षरण](#) और [जैव विविधता हानि](#) के संबंध में महत्त्वपूर्ण चर्चाएँ उत्पन्न कर रहा है।

- राजपुर और मसूरी रोड पर बड़ी आवासीय परियोजनाओं के कारण नजी और सार्वजनिक दोनों ही भूमि पर अतिक्रमण की सूचना मली है, जिसके कारण हरित क्षेत्र नष्ट हो रहा है और सार्वजनिक सुरक्षा को खतरा उत्पन्न हो रहा है।

मुख्य बद्दि

- नरिमाण गतिविधियों में वन भूमि और नजी भूखंडों को साफ किया जा रहा है, जिनमें [रसिपना नदी](#) तक जाने वाले [प्राकृतिक निकासी प्रणाली \(प्राकृतिक नालों\)](#) वाले क्षेत्र भी शामिल हैं।
- घाटियों को कीचड़ से भर दिया जा रहा है, जो वर्षा के दौरान बह जाता है तथा देशी वृक्षों को हटाने से स्थानीय जैव विविधता बाधित होती है तथा विकास क्षेत्र की वहन क्षमता से अधिक हो रहा है।
- अनियंत्रित नरिमाण गतिविधियों के कारण राजपुर रजि क्षेत्र में [जल स्रोत और नदियाँ नष्ट हो गई हैं तथा प्राकृतिक वनस्पति का स्थान शहरी विकास ने ले लिया है।](#)
 - यह स्थिति विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाने के लिये [सतत शहरी नियोजन](#) की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है।
- ऊँचे क्षेत्रों में अनियंत्रित नरिमाण के कारण अक्सर नचिले क्षेत्रों में [मलबा](#) और [भूस्खलन](#) होता है, जिससे नवासियों और पर्यावरण को खतरा होता है।
- इन चुनौतियों से निपटने के लिये, विशेषज्ञ भवन नरिमाण नियमों को लागू करने, [पर्यावरण प्रभाव आकलन \(EIA\)](#) करने और ज़मिमेदार नरिमाण प्रथाओं को बढ़ावा देने के महत्त्व पर जोर देते हैं।
 - उत्तराखण्ड के तराई क्षेत्रों की पारस्थितिक अखंडता को संरक्षित करने वाले सतत विकास की वकालत करने में जन जागरूकता और सामुदायिक भागीदारी भी महत्त्वपूर्ण है।

पर्यावरण प्रभाव आकलन (EIA)

- EIA एक संरचित पद्धति है जिसका उपयोग आगामी परियोजनाओं या गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले संभावित पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण करने और समझने के लिये किया जाता है।
 - इससे यह मूल्यांकन और पूर्वानुमान लगाने में सहायता मिलती है कि इन परियोजनाओं को क्रियान्वित करने से पहले इनका प्राकृतिक परविश पर क्या प्रभाव पड़ेगा।
- EIA की अवधारणा 1960 और 1970 के दशक में बड़े पैमाने पर विकास परियोजनाओं के पर्यावरणीय प्रभावों के संबंध में बढ़ती चर्चाओं की प्रतिक्रिया के रूप में उभरी।
- 27 जनवरी, 1994 को केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने पहली EIA अधिसूचना जारी की।
 - 1972 में स्टॉकहोम में [मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन](#) एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर था, जिसमें नरिणय लेने में पर्यावरणीय मूल्यांकन की आवश्यकता पर बल दिया गया।
 - अन्य उल्लेखनीय समझौतों में [जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन \(UNFCCC\)](#) और [जैविक विविधता पर कन्वेंशन \(CBD\)](#) शामिल हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में पर्यावरणीय प्रभावों पर विचार करने के महत्त्व पर प्रकाश डालते हैं।

